कक्षा-नवम् क्षितिज-काव्यखंड

विषय- हिंदी सबद(पद)

दिनांक-04/04/2020 कबीरदास

“मोको कहाँ ढूँढे बंदे.,..... .....।

..... , सब स्वांसो की स्वांस में ।।“

प्रसंग -प्रस्तुत शब्द पद में कबीर दास ने ईश्वर को सर्वव्यापी बताया है एवं उसे सच्ची खोज के द्वारा अपने हृदय में पाया जा सकता है।

व्याख्या- प्रस्तुत पंक्तियों में कबीर दास ने मनुष्य से कहा है कि तुम मुझे व्यर्थ ही यहां वहां ढूंढ रहे हो मैं तो तुम्हारे पास ही हूं मैं मंदिर, मस्जिद, काबा, कैलाश में नहीं मिलूंगा। मैं किसी कर्मकांड, योग, साधना और वैराग्य में नहीं रहता हूं जो सच्चे हृदय से खोजता है उसके क्षण भर के प्रयास में मैं उसे प्राप्त हो जाता हूं ।सच्चाई तो यह है कि मैं हर प्राणी के सांसो की सांसो में निवास करता हूं, मुझे पाना है तो हृदय में सच्ची लगन से ढूंढना होगा जब भक्त मुझे सच्चे प्रेम एवं सच्ची लगन से ढूंढते हैं तो मैं उनके हृदय में ही मिल जाता हूं।

विशिष्ट अर्थ- ईश्वर की भक्ति के लिए किसी कर्मकांड अथवा क्रियाकलाप योग,उपवास की जरूरत नहीं होती है। परमात्मा तो हर जीव के अंतर्मन में निवास करते हैं जो सद्भाव, प्रेम एवं सच्चे हृदय से ढूंढता है उसे उसके हृदय में भगवान मिल जाते हैं।

मुख्य तथ्य-

- धार्मिक आडंबरों का खंडन किया है ।
- ईश्वर सर्वव्यापी है।

शब्दार्थ- मोको-मुझे

देवल=देवालय,मंदिर

तालास=तलाश

प्रश्न-

1. **मनुष्य ईश्वर को कहां ढूंढता फिरता है?**
2. **कबीर ने ईश्वर प्राप्ति के लिए किन प्रचलित विश्वासों का खंडन किया है?**
3. **कबीर ने ईश्वर को’ सब स्वांसो की स्वांस में’ क्यों कहा है?**

डॉ.कुमारी पिंकी “कुसुम”